Volume-10, No. 1 Feb.-2023, pp. Hin.01-03

1857 क्रांति, अवध और पर्यावरण

डा० गिरीश कुमार सिंह, प्राचार्य एवं प्रोफेसर
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पीजी कालिज, अनूपशहर
बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश भारत।

सारांशः
मानवाधिकार और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाली कैन्याई मूल की बंगारी मथाई को वर्ष 2004 का नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया। उस समय अनायास ध्यान इस तथ्य पर गया कि पुरस्कार देने वाली समिति ने स्पष्ट रूप से अपनी शांति की अवधारणा में विस्तार किया है। वास्तव में, इस धरती पर शांति इस पर निर्भर करती है कि जिन पर्यावरणीय परिस्थितियों में हम जी रहे हैं उन्हें सम्हालने और सुरक्षित करने में हम कितने सक्षम है। प्रस्तुत शोध पत्र में अवध में की 1857 की क्रांति की तीव्रता का सम्बन्ध, तत्कालीन उत्पन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों से कितना था? यह रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्दः अवध, 1857 की क्रांति, पर्यावरण, नोबेल शांतिपुरस्कार, बंगारी मथाई,

मानवाधिकार और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाली केन्याइ मूल की बंगारी मथाई को वर्ष 2004 का नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया। उस समय अनायास ध्यान इस तथ्य पर गया कि पुरस्कार देने वाली समिति ने स्पष्ट रूप से अपनी शांति की अवधारणा में विस्तार किया है। वास्तव में, इस धरती पर शांति इस पर निर्भर करती है कि जिन पर्यावरणीय परिस्थितियों में हम जी रहे हैं। उन्हें सम्हालने और सुरक्षित करने में हम कितने सक्षम हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में अवध में की 1857 की क्रांति की तीव्रता का सम्बन्ध, तत्कालीन उत्पन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों से कितना था? यह रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। हालांकि यह सम्बन्ध बहुत गहरा नही रहा होगा, पर हमारा उद्देश्य यह देखना है कि सम्बन्ध था या नहीं, क्योंकि, जैसा कि बंगारी का भी मानना था, कि प्राकृतिक संसाधनों की कमी विद्रोह, युद्ध का एक कारण हो सकता है। उन्होंने कहा कि– ''शांति के लिये पर्यावरण बेहद मायने रखता है क्योंकि जब हमारे संसाधन नष्ट हो जाएंगे.....तो हमारे बीच उनके लिये लड़ाई होगी ही''1 असल में इसी सम्प्रति स्थापित तथ्य के आलोक में 1857 से पूर्व के अवध के पर्यावरणीय हालातों की जाँच पड़ताल करने का उद्देश्य इस शोध पत्र का रहा है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव जिस स्वरूप में भी रहा, उसको दर्शाने का एक लघु प्रयास इसमें किया गया है।

अवध प्रांत की सीमाएँ काल और राजनैतिक परिस्थितियों के सापेक्ष निरन्तर परिवर्तित होती रही। सामान्यतः अवध प्रांत का क्षेत्र 25° 34' उत्तरी अक्षांश से 29° 6' उत्तरी अक्षांश के मध्य 79° 45' पूर्वीदेशान्तर से 83° 11' पूर्वी देशान्तर तक ही विस्तृत रहा। 2

अवध का क्षेत्र नेपाल तथा गंगा के मैदान के मध्य विस्तृतथा। इसके तीन भौगोलिक विभाग किये जा सकते थे– उत्तरी, मध्य तथा दक्षिणी। इसके उत्तर के 1500 वर्गमील के क्षेत्रफल में चीड़, बाँस, पीपल, पाँकड़ आदि कि मूल्यवान वृक्षों का सघन तराई का जंगल था। जेम्सरेनेल की 'बंगाल एटलस' (1780) में इसको दर्शाया गया है। यह वन क्षेत्र अवध क्षेत्र के लगभग 1/10 भाग पर फैला था तथा इसमें अवध के तीन जनपद खीरी, बहराइच और गोंडा आते थे।4

अवध का मध्यवर्ती क्षेत्र, जो 1857 तक मैदान बन चुका था, नदियों के किनारे, तालाबों और झीलों के आस–पास का क्षेत्र था5, यह क्षेत्र अत्यधिक उर्वरा शक्ति युक्त था।6 19वीं सदी के आरम्भिक दशकों तक अपनी रक्षा के दृष्टिकोण से अवध के जमींदारों ने इस क्षेत्र के वनों को कटने से बचाए रखा था कि ताकि चकलेदारों से वे स्वयं की रक्षा कर सकें। स्लीमैन अपनी 1850 में प्रस्तुत रिपोर्ट में ऐसे जंगलों की 24 पट्टियों के बारे में सूचित करते हुए उसका कुल क्षेत्रफल 88212 वर्ग मील लिखता है।7 अवध का दक्षिणी भाग भी अत्यधिक

उपजाऊ था और यहाँ विभिन्न प्रकार का अनाज पैदा किया जाता था।

1855–56 की कृषिक सांख्यिकी उन जिलों में किसी भी वन क्षेत्र के न होने का प्रमाण प्रस्तुत करती है जहाँ स्लीमैन ने 882 1/2 वर्ग मील क्षेत्र में जंगल होने के आँकड़े दिये थे। इस प्रकार निश्चित रूप से 1855–56 तक लगभग 50 हजार एकड़ का वह भू–भाग कृषि भूमि में बदल चुका था जहाँ।[9] वीं सदी के प्रारम्भ में अत्यधिक सघन जंगल थे।' अवध के जंगलों के वन्य जीवों[10] से प्राप्त–होने वाले विभिन्न लाभों तथा अन्य आर्थिक उपयोग के वन्य पदार्थों से 1855–56 तक जंगलों के कट जाने से अवध के लोगों को वंचित हो जाना पड़ा भारी पर्यावरण असंतुलन पैदा हो गया। इसका सारा दोष ब्रिटिश कम्पनी की नीतियों को जाता था क्योंकि ज्यों–ज्यों अवध पर ब्रिटिश प्रशासन का प्रभुत्व बढ़ता गया उसने वहाँ से अधिक से अधिक राजस्व उगाही के उद्देश्य से तथा जमींदारों के छिपने के स्थानों को साफ करने के परोक्ष दृष्टिकोण से वन क्षेत्रों की कटाई की अनुमति प्रदान कर दी।[12] इस क्षेत्र में जल स्तर मात्र 10 फीट पर था और यह अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र था। अतः जंगलों की सफाई का कार्य कृषकों ने भी बड़ी तेजी से किया।[13]

इस प्रकार अवध की उपजाऊ भूमि, अनुकूल जलवायु तथा उन्नत वन क्षेत्र ने इसको आर्थिक विकास की असीम सम्भावनाओं से ओत–प्रोत कर रखा था। अतः न केवल कृषि क्षेत्र में ही उन्नति हुई बल्कि उद्योगों और व्यवसायिक क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी सशक्त उपस्थिति अंकित की उन्नत वन क्षेत्रों के असीमित दोहन से जहाँ एक ओर कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई वहीं दूसरी ओर उद्योगों और व्यवसायों के लिये कच्चा माल उपलब्ध था। किन्तु यह अवध का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि उन्नति की इतनी अधिक सम्भावनाओं के बाद भी वह अपेक्षित विकास प्राप्त नहीं कर सका। सम्भवतः 1857 का विद्रोह अवध क्षेत्र में इसी लिये केंद्रित था क्योंकि अवध के एक वर्ग ने अंग्रेजों की इस आर्थिक दोहन की नीति को परोक्ष रूप से पहचान लिया था जिसका खुलासा बाद में दादा भाई नौरोजी ने अपने लेख 'पावर्टी एण्ड अन्नब्रिटिश रूल इनइंडिया' में किया।[14]

किन्तु कृषि के लिये परिस्थितियाँ सदा ही एक सी नहीं रहीं। वनों की अत्यधिक कटाई और पहले से कृषित भूमि के अत्यधिक दोहन के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति और सिंचाई के संसाधनों पर तथा वर्षा की मात्रा इत्यादि पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ने लगा। 1836 में ही बटर ने मौसम के इस महान परिवर्तन को स्वीकार कर लिया था।[15] 1836 में बटर की रिपोर्ट लिखे जाने तक एक अच्छे वर्ष' में फसल का उत्पादन उस समय के एक सामान्य वर्ग के उत्पादन से भी काफी कम था जबकि उपरोक्त पर्यावरणीय परिवर्तन प्रारम्भ नहीं हुए थे।[16] उदाहरणार्थ पूर्व के किसी 'सामान्य वर्ष' में 'प्रति बीघा मक्का (खरीफ) तथा गेहूँ (रबी) का उत्पादन (लगभग) क्रमशः 10–11 मन तथा 20–25 मन था जो 1836 तक आते–आते घटकर एक अच्छे वर्ष के लिये क्रमशः 8–9 मन तथा 14–15 मन रह गया।'' यह विषमता आने वाले वर्षों में और गहन हो गयी क्योंकि वनों की सफाई का कम जोरों पर था।

डब्ल्यू० सी० बनेट ने अवध गजेटियर की भूमिका में, जो अवध के पतन के बाद तैयार हुआ था; अवध प्रान्त की आबादी के बारे में बताया कि वह लगभग 92 प्रतिशत ग्रामीण अंचल में रहती थी तथा अवध की जनसंख्या का 3/4 भाग निम्न जातियों के हिन्दुओं तथा शेष 1/4 भाग मुस्लिम, ब्राह्मण और राजपूतों आदि से बना था।[18]

यह एक सुस्थापित तथ्य है कि 19वीं सदी के आरम्भिक वर्षों में अधिक से अधिक संख्या में अवध के लोग सिपाही गिरी का काम करते थे तथा अनेकों क्षेत्रीय सेनाओं में अवध के सैनिकों की भर्ती थी। अंग्रेजों की 'बंगाल सेना में 60 प्रतिशत अवध व उत्तर पश्चिम प्रांत (उ० प्र०) के ही सैनिक 1857 से पूर्व भर्ती थे गाजीउद्दीन हैदर के काल में जब सर्वेक्षण किया गया तो अकेले बाँसवाड़ा के 16 हजार तथा बिजनौर के 15 हजार सैनिक केवल अंग्रेजी सेना ही में भर्ती थे। 19

सिपाही गिरी के कार्य में अधिकांशतः उच्च जाति के ब्राह्मण और राजपूत कुलों के सदस्य ही होते थे जोकि अवध की जनसंख्या का 1/4 भाग थे। सर चार्ल्स नेपियर जैसे प्रभावशाली अंग्रेज इन ''उच्च जातीय'' भाड़े के सैनिकों पर कोई विश्वास नहीं करते थे।[20] दूसरे, चूँकि इन उच्च जातीय सैनिकों का सम्बन्ध अवध के जमींदार वर्ग से भी था और इन जमींदारों के चकलेदारों से बच कर छिपने के स्थानों अर्थात् वनों को ब्रिटिश कम्पनी की नीतियों के अन्तर्गत ही साफ कर दिया गया था; अतः कोइ आश्चर्य नहीं जो इन उच्च जातीय सैनिकों में ब्रिटिश कम्पनी के प्रति आक्रोश हो बंगाल सेना में, चाहे कम संख्या ही में क्यों न

सही, अवध के निम्न जातीय कृषक भी भर्ती हुए थे। ये अवध के 92 प्रतिशत जनसंख्या से आये थे और एक तरह से ये 'वर्दी में किसान' ही थे। अतः स्पष्ट है कि परोक्ष 'रूप से 'बंगाल सेना के सैनिक अवध की समस्त असैनिक जनता की भावनाओं को प्रकट करते थे।[21]

अतः स्पष्ट है कि जिस पर्यावरणीय असंतुलन ने अवध की जनता को प्रभावित किया, उसकी कमोवेश अनुगूंज, भावनात्मक रूप में ही सही, उन सैनिकों के व्यवहार में उपस्थित थी जिन्होंने (1857) में विद्रोह किया। अवध में 1857 की क्रान्ति के अन्य कारण भी थे परन्तु पर्यावरणीय असन्तुलन भी उनमें से एक महत्त्वपूर्ण कारण था।

सन्दर्भः

1. हिन्दुस्तान, नई दिल्ली, सोमवार 13 दिसम्बर 2004, पृ० 9
2. अवध गजेटियर परिचय खंड पृ० 1
3. इरविन एच०सी०. गार्डन ऑफ इण्डिया पार्ट–1, पृ०सं०, 19 4.
4. वही, पृ० 15
5. स्लोमेन डब्ल्यू० एच० ए० जनीपूदा किंगडम ऑफ अवध, पार्ट–2, पृ० 187
6. गजेटियर 1878. पृ० 497–98
7. स्लीमेन डब्ल्यू. एच० ए०. उपरोक्त, पृ० 279–87
8. डोनाल्ड बटर आउटलाइन ऑफ द टोपोग्राफी एण्ड स्टेटिक्स ऑफ द साउदरन डिस्ट्रिक्ट ऑफअवध एण्ड कैन्टोमेन्ट ऑफ सुल्तानपुर कलकत्ता 1839, पृ० 10–14
9. एग्रीकल्चरल स्टेटिक्स ऑफ ब्रिटिश इण्डिया 1855–56, कलकत्ता
10. इरविन एच०सी०गार्डन ऑफ इण्डिया पार्ट–1, पृ० 15
11. जैसे– खैर से रेजीन (Resin) की प्राप्ति होती थी बबूल व नीम से गोंद प्राप्त होता था।
12. डा० सिंह जी० के०, अवध के सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास का पुनर्मूल्यांकन (1775–1837), पृ० 128–29 (अप्रकाशित शोध प्रबंध टैगोर लाइबेरी, लखनऊ 2000–01)
13. डोनाल्ड बटर आउटलाइन ऑफ द टोपोग्राफी एण्ड स्टेटिक्स ऑफ द साउदर्न डिस्ट्रिक्ट ऑफ अवध एण्ड कैन्टोमेन्ट ऑफ
14. डोनाल्ड बटर आउटलाइन ऑफ द टोपोग्राफी एण्ड स्टेटिक्स ऑफ द साउदर्न डिस्ट्रिक्ट ऑफ अवध एण्ड कैन्टोमेन्ट ऑफ सुल्तानपुर कलकता, 1839, पृ० 10
15. डा० सिंह जी०के०, उपरोक्त, पृ० 130 सुल्तानपुर, कलकता, 1839, पृ० 56–57
16. वही
17. वही
18. बनिट, डब्ल्यू०सी०. अवध गजेटियर
19. स्लीमेन डब्ल्यू० एच० ए०. जनीं थ्रू द किंगडम ऑफ अवध, पार्ट–2, पृ० 170
20. ग्रोवर, बी० एल०, यशपाल आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, नई दिल्ली, 1999. पृ. 190
21. प्रोवर, बी० एल०, यशपाल आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्याँकन, नई दिल्ली, 1999, पृ० 190